भारतीय जैन संगठन

'योग्य जीवन साथी के चयन की प्रक्रिया में बदलाव' – बी.जे.एस. की नई पहल

बदलते हुए इस जमाने में जैन समाज के उच्च शिक्षित युवक एवं युवतियों को अपने ही समाज में योग्य जीवन साथी चुनने की जिम्मेवारी एवं अधिकार देकर अभिभावकों ने मददगार की भूमिका निभाना ।

जीवन साथी चयन की प्रचलित प्रक्रिया

परिवार में बेटे–बेटी जब विवाह की उम्र में आते है, तब उनके विवाह तय करने के लिए पहल करना अभिभावक की जिम्मेवारी होती है । अभिभावक अपने बेटे–बेटी का बॉयोडेटा तैयार कर रिश्तेदार एवं जान – पहचान के लोंगों से रिश्तों की जानकारी की अपेक्षा करते हैं । आजकल इस प्रक्रिया में मैरिज ब्यूरो एवं टेक्नोलॉजी की मदद भी ली जाती है । रिश्तों की जानकारी मिलने पर अभिभावक अपनी खुद की दृष्टी से, अपने पॅरामीटर लगाकर, तहकीकात कर बेटे–बेटी के लिए योग्य जीवन साथी चयन करने का प्रयास करते हैं। इस प्रक्रिया में अभिभावक अपने बेटे–बेटी से सलाह मशविरा कर निर्णय करते हैं।

प्रचलित प्रक्रिया के गुण

१. अभिभावक रिश्ता तय करने हेतु पहल करते हैं ।
२. रिश्ता तय करने में रिश्तेदार, समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं मित्र परिवार मदद करते हैं।
३. रिश्ता जान – पहचान के लोगों में तय किया जाता है।
४. अभिभावक अपने बेटे–बेटियों के लिए योग्य जीवनसाथी चयन करने हेतु परिवार, खानदान, रेप्युटेशन , आर्थिक परिस्थिति, शिक्षा आदि बातों की तहकीकात कर रिश्ता तय करते हैं ।
५. रिश्ता तय करते समय बेटे–बेटी की सहमति भी ली जाती है ।

BJS
Bharatiya Jain Sangathan
empowering today enriching tomorrow

BJS
Bharatiya Jain Sangathan

'योग्य जीवन साथी के चयन की प्रक्रिया में बदलाव'– बी.जे.एस. की नई पहल

प्रचलित प्रक्रिया के दोष

१. समय के बदलाव के साथ प्रचलित प्रक्रिया में अपेक्षित बदलाव नहीं हुआ हैं।

२. युवक–युवतियों की आपसी कम्पॅटेबिलिटी (Compatibility) जानने एवं समझने का अभाव।

३. युवक–युवतियों को आपस में एक दो बार ही मिलने का अवसर मिलता है और वह भी अत्यधिक सीमित समय के लिए।

४. युवक –युवतियों को आपस में मिलने का वातावरण खुलेपन का नहीं होता।

५. अभिभावक युवक एवं युवतियों की प्रमाणित जानकारी Authenticate Information हासिल नहीं कर पातें।

६. रिश्तेदार एवं मित्र परिवार जानकारी तो देते हैं, लेकिन जिम्मेवारी लेते नहीं।

७. अभिभावक एवं रिश्तेदारों का युवक–युवतियों पर अनचाहा दबाव रहता है।

८. अभिभावकों को अपने बेटी से ज्यादा शिक्षित जीवन साथी ढूढने में काफी दिक्कत होती है।

९. अनपेक्षित अवरोध शिक्षा, शहर, व्यापार, नौकरी आदि हेतु रहता है।
(Unwanted Barrier of education, City, Business, Job etc.)

१०. कन्या पक्ष ही रिश्ता देखने हेतु पहल कर सकता है। युवकों के परिवार की पहल समाज में अयोग्य मानी जाती है

११. युवतियाँ अपने अंर्तमन की बात पूरे परिवार के सामने रखने का साहस नहीं कर पाती।

१२. बार–बार युवती को देखने आना व उसे नापसंद करने से उसका आत्मबल कम होता है।

१३. युवक – युवतियों को देखने के लिए कई लोग, कई बार आते है। इससे समय और पैसा दोनों की बरबादी होती है।

१४. युवती को देखने के लिए अलग –अलग ड्रेस में बुलाया जाता है। वह एक भावनाप्रधान व्यक्ति है, इस बात को नजर अंदाज किया जाता है।

१५. इंटरव्हयू के नाम पर, देखने आये हुये लोग, बेवजह के प्रश्न कर युवति के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाते हैं।

बी.जे.एस. का अनुभव

समय काफी तेजी से बदल रहा है। बदलते समय के साथ–साथ लोगों की जरूरतें भी बदल रही हैं। आज के जमाने में शिक्षा का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। समाज में, युवक एवं युवतियॉ केवल शिक्षित ही नहीं हो रहे, बल्कि उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ये शिक्षित, उच्चशिक्षित युवक–युवतियॉ विवाह के मामलें में अपनी राय स्पष्ट रूप से रखते हैं। इन युवक–युवतियों की जीवनसाथी के चयन हेतु अपेक्षायें काफी बढ़ गयी हैं। कॅरियर की प्राथमिकता, बड़े शहर की अभिलाषा, व्यक्तिगत आर्थिक स्वतंत्रता आदि के वजह से विवाह के मामलें में युवतियॉ विशेष रूप से अपना मत रखने लगी हैं। बी.जे.एस. के संस्थापक श्री शांतीलाल मुथ्था पिछले तीस वर्षों से समाज के वैवाहिक विषयों पर कार्य कर रहे हैं। जैन समाज में विवाह तय करनें में जो दिक्कतें आ रही हैं, उसके दुष्परिणाम समाज को भुगतने पड़ रहे हैं, वो काफी भयावह हैं। आज अभिभावकों को अपने बेटे–बेटियों के लिए योग्य जीवनसाथी का चयन करने में काफी कठिनाईयों का सामना करना पडता है। योग्य रिश्ते मिलते नही, जान पहचान के लोग साथ देते नहीं, युवक – युवतियों द्वारा विवाह की अपेक्षा शिक्षा को अधिक महत्व देने आदि की वजह से युवक– युवतियों की उम्र काफी बढ़ने लगी है तथा सही समय पर रिश्ता तय नहीं हो पाता है। आज के उन्मुक्त वातावरण में रिश्तों की तहकीकात ठीक से कर पाना भी बडा कठिन है। सगाईयाँ टूट रही हैं, तलाक बढ़ रहे हैं तथा विवाह के पश्चात परिवार में खुशियों का अभाव है। यह पूरे समाज के लिए अत्यधिक चिंता का विषय है।

वैवाहिक विषयों की समस्या हल करने के लिए बी.जे.एस. पिछले तीस वर्षों से प्रयासरत है। इस श्रृंखला में युवक – युवती परिचय सम्मेलन शुरू किये गये। बदलती जरूरतों के मुताबिक इन परिचय सम्मेलनों के स्वरूप में भी बदलाव किये गये। शिक्षित परिचय सम्मेलन, उच्चशिक्षित परिचय सम्मेलन, एन.आर.आय. परिचय सम्मेलन, ग्रामीण क्षेत्र हेतु परिचय सम्मेलन तथा विधवा विदूर, परित्यक्ता पुर्नविवाह हेतु परिचय सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं।

इस अनुभव के आधार पर, नई पीढी की नई सोच को ध्यान में रखते हुये, पुरानी परंपराओं में बदलाव कर, बी.जे.एस. की ओर से वैवाहिक रिश्ते तय करने की नयी पहल समाज के समक्ष प्रस्तुत कर रह है।

बी.जे.एस. की नई पहल

बदलते हुए इस जमाने में जैन समाज के उच्चशिक्षित युवक एवं युवतियों को अपने ही समाज में योग्य जीवन साथी चुनने की जिम्मेवारी एवं अधिकार देकर अभिभावकों ने मददगार की भूमिका निभाना ।

नई पहल के गुण :

१.इस प्रकिया में युवक–युवतियाँ अपने क्रायटेरिया एवं पॅरामीटर्स को ध्यान में रख कर जीवनसाथी चयन का प्रयास कर सकते हैं ।

२.टेक्नोलॉजी का उपयोग कर तथा मैरिज साईट्स की मदद से इन युवक–युवतियों को अपने समाज मे से रिश्ते ज्यादा आसानी से मिल सकेंगे ।

३.युवक–युवतियों का अपने ही समाज में फ्रेन्ड सर्कल काफी बढ़ गया है, जिससे समाज में रिश्ता ढूंढना अधिक सुविधाजनक है ।

४.चयन किये हुए जीवनसाथी के सम्पूर्ण बेकग्राऊंड को समझना, उसके बारे में पूरी जानकारी हासिल करना अब ज्यादा आसान होगा ।

५.चयन किये हुए जीवनसाथी एक–दूसरे से मानसिक रूप से कम्पेटेबल (compatible) हैं या नहीं, जानने मे मदद मिलेगी ।

६.चयन की इस प्रक्रिया में युवक–युवतियों पर रिश्तेदार एवं मित्र परिवार का मानसिक या अन्य दबाव नहीं रहेगा

७.चयन के इस प्रक्रिया में युवक– युवतियाँ खुले वातावरण में मुलाकात, बातचीत एवं विचार कर सकेंगे ।

८.इस प्रक्रिया में युवक–युवतिमे से कोई भी पहल कर सकते हैं ।

९.युवक–युवतियों द्वारा, चयन किये गये दो–तीन प्रस्ताव अभिभावकों के समक्ष रख, उनके अनुभव के आधार पर सहमति लेना इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है ।

१०. इस प्रक्रिया में युवक– युवतियों की जिम्मेदारी काफी बढ़ेगी क्योंकि आपसी सहमति से रिश्ता होने पर युवक–युवति भविष्य में भी आपसी सामंजस्य के साथ रह सकेंगे ।

११. रिश्ता आपसी सहमति से तय होने की वजह से भविष्य में शिक्षा एवं कॅरियर के मामले में सहयोग मिलेगा

नई प्रक्रिया के दोष

१. अभिभावकों को ऐसा महसूस हो सकता है कि उनका महत्व कम हो रहा है ।

२. अभिभावकों को ऐसा महसूस हो सकता है कि युवक–युवतियों को ज्यादा स्वतंत्रता मिल रही है ।

३. अभिभावकों को इस बात की चिंता हो सकती है कि बेटे–बेटीयों द्वारा किया गया चयन सही न भी निकले ।

नई प्रक्रिया से समाज को लाभ

१. समाज के उच्च शिक्षित युवक –युवतियाँ अपने ही समाज में रिश्ते तय करेंगे ।

२.सगाईयाँ टूटेगी नहीं, तलाक के प्रकरण कम होंगे तथा विवाह के पश्चात परिवार में खुशियाँ बढ़ेगी।

३.चयन का अंतिम निर्णय अभिभावकों की सहमति से होगा अत: सामाजिक परम्परा का निर्वाह होगा ।

४.युवतियों का समाज से पलायन रूकेगा ।

नई प्रक्रिया में युवक – युवतियों की जिम्मवारियाँ

बी.जे.एस. की इस पहल से, जैन समाज में, समय के बदलाव को देखते हुए, युवक–युवतियों को अपने जीवनसाथी के चयन का अवसर प्राप्त होगा । इस पहल के माध्यम से युवक–युवतियों को जहाँ एक और स्वतंत्रता मिलती है वहीं दूसरी ओर उनकी जिम्मेवारी भी बढ़ती है । युवा पीढ़ी को इस बात का ऐहसास रहना चाहिए तथा निम्नलिखित मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए :

१.चयन की इस प्रक्रिया में प्रत्याशी का चयन जैन समाज में से होना चाहिए । यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात है । सम्प्रदायों के बंधन को छोडा जा सकता है ।

२.युवक –युवतियों ने चयन की प्रक्रिया के दरम्यान प्रत्याशी के विषय में अपने परिवार से चर्चा करना चाहिए।

३.युवक–युवती जिन प्रत्याशियों के सम्पर्क में है उनकी

सम्पूर्ण जानकारी एवं तहकीकात स्वयं की जिम्मेवारी होगी। इसके लिए अपने फ्रेन्डसर्कल, टेक्नोलॉजी तथा अभिभावकों की मदद लेना चाहिए।

४. युवक-युवतियों ने प्रत्याशी के स्वभाव, आदतें, शिक्षा, रूचि, स्वास्थ, आर्थिक स्थिति तथा पारिवारिक जानकारी आदि हासिल करना चाहिए।

५. टेक्नोलॉजी के माध्यम से सम्पर्क करते समय सावधानी बरतना चाहिए एवं अपनी सीमाओं का ध्यान रखना चाहिए।

६. प्रत्यक्ष मुलाकात योग्य समय एवं योग्य स्थान पर होना चाहिए।

७. मुलाकात, चॅटिंग, सर्फिंग आदि करते समय सीमा अवधि एवं मर्यादाओं का भी ध्यान रखना चाहिए।

८. चयन प्रक्रिया में निर्णय उचित समय के भीतर लेना चाहिए।

९. निर्णय करते समय दिल और दिमाग दोनों का उपयोग करना चाहिए।

अभिभावकों की जिम्मेवारी

१. अभिभावकों द्वारा बेटे-बेटियों को जीवनसाथी चयन करने की जिम्मेदारी एवं अधिकार देने के बाद उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता देना चाहिए।

२. प्रत्याशी चयन के संबंध में बेटे-बेटियों द्वारा अभिभावकों से किसी भी प्रकार की मदद की अपेक्षा की गई, तो अनुभव के आधार पर उन्हें सहयोग दिया जाना चाहिए।

३. प्रत्याशी चयन प्रक्रिया के दौरान बेटे-बेटियों के कार्य में अधिक दखलांदाजी न करते हुए उन पर भरोसा करना चाहिए।

४. बेटे-बेटियों द्वारा चयनित प्रस्तावों पर उनके साथ चर्चा करते हुए संबंधित परिवारों से सम्पर्क कर बातचीत को आगे बढ़ाना चाहिए तथा अंतिम निर्णय अभिभावकों को ही करना है।

५. अभिभावकों द्वारा छानबीन में यदि प्रस्ताव में दोष पाया जाता है तो अपने बेटे-बेटीयों से बातचीत कर उन्हें ठीक से समझाना।

६. वर्तमान समय में सभी के पास रिश्तों की कमी है, ऐसे समय में अच्छे रिश्तें केवल पत्रिका न मिलने की वजह से छूट जाते है। पत्रिका पर निर्भरता कम होनी चाहिए। अगर प्रत्याशी मांगलिक हो तो पत्रिका मिलान की जा सकती है।

बी.जे.एस. की नई पहल : कार्यपध्दति

जिन परिवारों में विवाह योग्य बेटे-बेटियां है, ऐसे परिवारों में योग्य जीवनसाथी चयन की प्रक्रिया में निम्नलिखित कार्य पध्दति अपनाई जानी चाहिए :

१. इस नई पहल की जानकारी देने के लिए परिवार के सभी सदस्यों से विस्तृत चर्चा करनी चाहिए।

२. समय-समय पर बेटे-बेटियों द्वारा अपनाई जा रही प्रक्रिया की प्रगति पर चर्चा करे एवं अंतिम निर्णय एकमत से पूरे परिवार द्वारा लिया जाना चाहिए।

३. परिवार में चर्चा के पश्चात इस नई पहल को अपनाने का निर्णय तथा रिश्ता तय होने की जानकारी, बी.जे.एस. की हेल्प लाईन 'marriage4ever@bjsindia.org' पर दें ताकि समाज हित में रिकार्ड रखा जा सके।

BJS भारतीय जैन संगठन
Bharatiya Jain Sangathan
Head Office : Ground Floor, Muttha Towers, Loop Road, Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411006
Tel. : 020 4128 0011, 4128 0012, 4128 0013
Website : www.bjsindia.org E mail : info@bjsindia.org Facebook : www.facebook.com/BJSIndia
Email: info@bjsindia.org Website: www.bjsindia.org Facebook: www.facebook.com/BJSIndia